डॉ. गैरी मीडर्स, ईश्वर की इच्छा को जानना, सत्र 9, बाइबिल मॉडल में उभरने वाले घटक

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

खैर, भाग 2 में हमारे पिछले पाठों में से कुछ में आपका स्वागत है, विवेक के लिए बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्य मॉडल की आवश्यकता होती है। और यह जीएम 9 है, जीएम 9, इसलिए सुनिश्चित करें कि आपके पास इसके लिए अपनी सामग्री है। जीएम 9 और 10, वापस आएं और संक्षेप में बताएं।

मुझे पता है कि हमने कई तरीकों से कुछ दोहराव देखा है, लेकिन हर बार जब मैं कुछ दोहराता हूँ, तो मैं कुछ नया जोड़ता हूँ, और मैं बस इसे उसी तरह से पहनने की कोशिश करता हूँ। मुझे उम्मीद है कि यह आपके लिए कारगर साबित होगा। इस तथ्य के बावजूद कि आपको कभी-कभी ऐसा लग सकता है कि हम एक ही चीज़ को देख रहे हैं, वही चीज़ें अलग-अलग तरीकों से वापस आती हैं। वे विश्वदृष्टि में वापस आती हैं, वे मूल्यों में वापस आती हैं, वे कुछ बनाए गए मॉडलों के संबंध में वापस आती हैं।

तो वैसे भी, ईश्वर के विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को जानना और यह देखना कि यह घटकों की समीक्षा है, हम इन घटकों के बारे में एक बार फिर से सोच सकते हैं, और मुझे लगता है कि ऐसा करने से हमें मदद मिलेगी। मैं आपको बस यह याद दिलाना चाहता हूँ कि आपके पास विषय-सूची है, और यह व्याख्यान 9 है, घटक जो बाइबिल मॉडल में उभरते हैं। मैं बस उन वस्तुओं को एक साथ लाना चाहता हूँ जिन्हें हमने कई प्रमुख स्थानों पर उद्धृत किया है, और फिर हम पाठ 10, कुछ निर्णयों को संसाधित करने में बात करने जा रहे हैं, ताकि थोड़ा और ज़ोर से सोचा जा सके।

फिर हम भाग 2 से निपटेंगे, और भाग 3 पर जाएंगे। वह व्यक्तिपरक चुनौतियों को समझना होगा, और मैं आपको गारंटी दे सकता हूँ कि यह आपके लिए दिलचस्प होगा। मुझे विवेक, आत्मा और अन्य चीज़ों पर काम करना बहुत पसंद है। तो, बस अपनी सीटबेल्ट लगाएँ, और फिर से शुरू करें। ठीक है, परमेश्वर की इच्छा को समझने के लिए बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के मॉडल के घटकों की पहचान करना आवश्यक है जो मार्गदर्शन करते हैं, और हमने इसे विभिन्न तरीकों से किया है।

मैं वापस आकर जल्दी से इन पर नज़र डालूँगा। ये छोटे वीडियो होंगे, लेकिन मैं सिर्फ़ उन विषयों पर प्रकाश डालना चाहता हूँ जिन पर हम कुछ खास तरीकों से काम कर रहे हैं। ठीक है, अब, जो विषय उभर कर सामने आते हैं।

खैर, जो बात उभर कर आती है वह यह है। निर्णय एक तर्कपूर्ण बाइबिल विश्वदृष्टि और मूल्य प्रणाली द्वारा संसाधित किए जाने चाहिए। इसलिए, अगर हम परमेश्वर की इच्छा जानने और

उसके साथ सहसंबंधित निर्णय लेने की बात कर रहे हैं, तो यह सब उस विश्वदृष्टि और मूल्य मॉडल से तर्क पर आधारित है।

यहीं से हमें जानकारी मिलती है। यहीं से हम अपने फैसले लेते हैं। इसके अलावा, इंसानों को परमेश्वर की छवि को प्रतिबिंबित करना चाहिए।

हम ईश्वर के प्रतिनिधि हैं, प्रतिनिधित्व नहीं। यह एक भौतिक छवि है, और हमारे पास वह नहीं है, बेशक, लेकिन हम प्रतिनिधि हैं। मुझे लगता है कि यही कारण है कि नैतिकता इतनी बड़ी चीज है।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ, और परमेश्वर ने हमें जीवन के प्रति विशेष रूप से नैतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। हमें मसीह की छवि के अनुरूप बनना है, और इसका मतलब है कि मसीह की नैतिक छवि के अनुरूप बनना। इसलिए, हमारे लिए परमेश्वर की छवि के बारे में सोचना बेहद महत्वपूर्ण है।

मैं इसके बारे में कुछ देर में बताऊंगा। उफ़। पतन।

हमने पतन के बारे में बहुत बात की है। यह हमारे कौशल को प्रभावित करता है। यह हमारे संसार को, यहाँ तक कि उस संसार को भी प्रभावित करता है जिसमें हम रहते हैं, पतन और बाढ़ के साथ।

हम जिस धरती की जांच कर रहे हैं, वह वह नहीं है जिसे भगवान ने मूल रूप से बनाया था। चीजें घटित हुई हैं, और इस बात पर अलग-अलग विचार हैं कि यह कितना सच है, लेकिन मुझे लगता है कि ऐसी चीजें हुई हैं, जिन्होंने हमारे लिए वहाँ समस्याएं पैदा की हैं। और पतन हमारे दिमाग, हमारी सोच और हमारी क्षमताओं को प्रभावित करता है।

हम वह नहीं हैं जो हम हो सकते थे। आदम एक अद्भुत रचना थी, और मैं चाहता हूँ कि मेरे पास भी आदम जैसी मानसिक क्षमताएँ हों, लेकिन हमने खुद को कई तरह से खराब कर लिया है। इसके अलावा, पाठ की व्याख्या संदर्भ में होनी चाहिए।

यह बहुत ज़रूरी है। आप तब तक बाइबल का मतलब नहीं बता सकते जब तक आप बाइबल का मतलब नहीं समझ लेते। आपको शास्त्रों को उनकी अपनी शर्तों पर समझना चाहिए।

कविता, कथा, पत्र साहित्य, भविष्यवाणी संबंधी सामग्री, सर्वनाश संबंधी सामग्री, इन विधाओं का एक खास अर्थ होता है, और हमें यह समझना होगा कि लेखकों ने जो संदेश देने का इरादा किया था, उसे सही तरीके से समझने के लिए हम उनसे क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं। यह शोध का विषय है। कोई भी व्यक्ति अपने आप स्वाभाविक रूप से ऐसा नहीं करता है।

जब मैं सेवानिवृत्त हुआ तो मेरे पास लगभग 7,000 खंडों की एक लाइब्रेरी थी। यह अब ह्यूस्टन में एक धार्मिक पुस्तकालय के पास है। मेरे पास पुस्तकों का एक बहुत ही छोटा समूह है जिसका उपयोग मैं कुछ ऑनलाइन चीजों और सिर्फ अपनी शिक्षा के लिए करता हूँ।

लेकिन सच्चाई यह है कि हमें शोध करना होगा। यह उन लोगों के लिए परमेश्वर के वचन में बढ़ने का महत्वपूर्ण हिस्सा है जो इस तरह से बढ़ना चाहते हैं कि वे दूसरों के नेता बन सकें। बहुत से लोगों को ऐसा करने का अवसर नहीं मिलता।

बाइबिलिकली लर्निंग साइट बहुत से लोगों को ऐसी जानकारी देती है जो उन्हें नई कृत्रिम बुद्धिमत्ता और इन पाठ्यक्रमों का अन्य भाषाओं में अनुवाद करने के अन्य तरीकों से नहीं मिल सकती थी। यह बहुत बढ़िया है, और यह उन लोगों के लिए ग्रह पर ईश्वर के ज्ञान को बढ़ाएगा जो सीखने का अवसर लेंगे। साथ ही, अगर किसी के पास संसाधन नहीं हैं, तो उसके लिए अभी भी उस तक पहुँचना एक चुनौती है।

इंटरनेट ने इसमें बहुत बड़ा योगदान दिया है, और मैंने कई मौकों पर Google Scholar का ज़िक्र किया है। ठीक है, तो इसे संदर्भ में होना चाहिए। प्रूफ़ टेक्स्ट अनिश्चित हैं।

जैसा कि किसी ने कहा, प्रमाण पाठ वाला व्यक्ति बहाने वाला व्यक्ति होता है। और इसका मतलब यह है कि वे उस पाठ के शब्दों का इस्तेमाल बयान देने के लिए कर रहे हैं, जो वे कहना चाहते हैं। आप बाइबल के साथ ऐसा नहीं कर सकते।

आप सिर्फ़ अपनी पसंद की आयतें चुनकर वही नहीं बना सकते जो आप सुनना चाहते हैं। और ऐसा अक्सर तब होता है जब लोग बाइबल में ऐसे शब्द ढूँढ़कर अपनी राय और अपनी पूर्वधारणाओं को पुष्ट करने की कोशिश करते हैं जो उनका समर्थन करते हैं। लेकिन समस्या यह है कि उन शब्दों का संदर्भ में कुछ मतलब होता है।

इसका मतलब शायद वह न हो जो आप सोचते हैं, और इस पर विचार किया जाना चाहिए। इसलिए, प्रमाण पाठ विशेष रूप से अनिश्चित हैं। हम विवेक करने के लिए स्वतंत्र हैं।

हम चुनने के लिए स्वतंत्र हैं, लेकिन हम अपनी प्रकृति और अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों, अपने मॉडल के भीतर भी स्वतंत्र हैं। हमारी प्रकृति हमें कई तरह से प्रतिबंधित करती है क्योंकि किसी व्यक्ति की इच्छा का आकर्षण उसकी प्रकृति की दिशा में होता है। इसलिए, चुनने के लिए स्वतंत्र होना सच है, लेकिन स्वतंत्रता एक मिथक है क्योंकि हम खुद से स्वतंत्र नहीं हैं।

हम उन पूर्वधारणाओं से मुक्त नहीं हैं जो हमें प्रेरित करती हैं। इसलिए, चुनने की स्वतंत्रता होना जितना एक वरदान हो सकता है, उतना ही अभिशाप भी हो सकता है। हमें इसे बहुत सावधानी से लेना होगा।

बुद्धि एक विश्वदृष्टि से प्राप्त होती है। जो बुद्धिमान है उसे करने के लिए तर्क दिया जाता है, न कि केवल दावा किया जाता है या मान लिया जाता है। बुद्धि ज्ञान का एक उत्पाद है।

बुद्धि अपने आप में एक ज्ञान है, जैसा कि कई बुद्धि आलोचक और टिप्पणीकार आपको बताएंगे। इसलिए, बुद्धि वह चीज़ नहीं है जिसके बारे में हम सामान्य जीवन में बात करते हैं। आप जानते हैं, वह एक बुद्धिमान व्यक्ति है या वह एक बुद्धिमान व्यक्ति है।

नहीं, बाइबल में बुद्धि का क्षेत्र उससे कहीं ज़्यादा जटिल है। यह कुशलता से जीने की कला है, और यह कुशलतापूर्ण जीवन शास्त्र से लिया गया है, तब भी जब शास्त्र का हवाला नहीं दिया जाता, जैसा कि ज़्यादातर बुद्धि साहित्य में होता है। इसलिए, विषय उभर कर आते हैं।

आप इन पर थोड़ा विचार कर सकते हैं। हमारे पास ईश्वर की छवि में निर्मित इमागो देई के निहितार्थ हैं। हमने इस बारे में बात की है, और मुझे इस पर अधिक विस्तार से बात करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन मैं इसे इस सब में एक घटक के रूप में वापस लाना चाहता हूँ।

मनुष्य ईश्वर की छवि है, जिसका अर्थ है कि वह एक दृश्य शारीरिक है, जिसका अर्थ है कि वह अदृश्य, अशरीरी, क्षमा करें, ईश्वर का प्रतिनिधि है। कभी-कभी हम एक प्रश्न पूछते हैं: क्या ईश्वर, ईश्वर के रूप में, अंतरिक्ष में स्थान लेता है? अब यीशु करता है क्योंकि यीशु मनुष्य बन गया। आत्मा अंतरिक्ष में कैसे स्थान लेती है? इसका क्या अर्थ है कि ईश्वर सिंहासन पर है? हमारे पास वह छवि है, लेकिन यीशु ही एकमात्र ऐसा है जिसे हम कभी देख पाएंगे।

जहाँ तक मैं समझता हूँ कि बाइबल उसके और अवतार तथा ईश्वर की अदृश्य प्रकृति के बारे में क्या कहती है। वह भौतिक अर्थ में भौतिक नहीं है। हम प्रतिनिधि नहीं बल्कि प्रतिनिधि हैं।

अब, बिना किसी भेदभाव के, सभी मानवजाति ईश्वर की छवि है। चाहे वह कोई भी हो। जो भी पैदा हुआ है वह ईश्वर की छवि में है।

छवि को इतना अधिक ऑन्टोलॉजिकल रूप से नहीं बल्कि अस्तित्वगत रूप से समझा जाना चाहिए। इसका मतलब यह है कि यह इस बात की अभिव्यक्ति है कि ईश्वर किस तरह से खुद को एक इंसान में स्थानांतरित करने के लिए चित्रित करता है। हम सोचते हैं, हम महसूस करते हैं, हम चुनते हैं, और हम अपने चुनावों से ईश्वर की महिमा कर सकते हैं, या हम अपने चुनावों से ईश्वर के खिलाफ हो सकते हैं।

और पवित्र शास्त्र इन दोनों बातों को दर्शाता है। इसलिए परमेश्वर की छवि महत्वपूर्ण है। इस पर बहुत कुछ पढ़ा जा सकता है।

इमागो देई के पारंपरिक कार्य। परंपरागत रूप से, हम सोचने, महसूस करने, चुनने और आत्मनिर्धारण के बारे में बात करते हैं। और यही हमें अलग बनाता है।

जानवरों का साम्राज्य बहुत सोचता है। इसके अलावा, उनमें बहुत कुछ ऐसा भी है जिसे हम विभिन्न तरीकों से कहते हैं। अगर आपने कभी कुत्ता पाला है, तो आप जानते होंगे कि कुत्ते बेवकूफ नहीं होते।

और फिर भी, उसी समय, वे यह नहीं समझ पाते कि घर से बाहर कैसे निकलें। उसी समय, एक इंसान ऐसा कर सकता है, भले ही दरवाज़े समायोज्य हों और इसी तरह की अन्य चीज़ें। इसलिए, जानवरों के साम्राज्य और मानव साम्राज्य के बीच एक अंतर है, और हम इमागो देई हैं।

देवदूत इमागो देई नहीं हैं। हम इमागो देई हैं। सृष्टि में हमारा एक विशेष स्थान है।

निर्णय लेने की प्रक्रिया में, हम ईश्वर पर चिंतन करते हैं। हम उनके विश्वदृष्टिकोण और मूल्य संरचना को शामिल करके, उन्हें अपने निर्णयों के लिए मार्ग के रूप में शामिल करके उनकी महिमा करते हैं। न सोचना और न चुनना हमारे ईश्वर को प्रतिबिंबित करने का उल्लंघन करता है।

दूसरे शब्दों में, अगर हम कहते हैं, ओह, जो भी हो, या हम अपने सवालों के जवाबों की तलाश करना छोड़ देते हैं, तो हम परमेश्वर की महिमा नहीं कर रहे हैं। हम परमेश्वर का अपमान कर रहे हैं। परमेश्वर ने हमें अपनी खोज में उसे प्रतिबिंबित करने के लिए बनाया है, उसके लिए और अन्य चीजों के लिए भी।

परंपरा मनुष्यों में उस इमागो देई के इमागो पारंपरिक कार्यों को कार्य करती है। ठीक है, अब हम स्लाइड छह पर चलते हैं। पतन के निहितार्थ।

हमने इस बारे में बहुत बात की है, लेकिन चलिए कुछ मुख्य बिंदुओं पर चर्चा करते हैं। पतन ने नोएटिक को परिभाषित किया, और यह शब्द नोएटिक ग्रीक शब्द नोस से आया है, जिसका अर्थ है मन। एक नोएटिक प्रभाव है, यानी मन को प्रभावित करने वाला पतन।

हम वह नहीं हैं जो हम हो सकते थे, मानसिक रूप से भी नहीं। कभी-कभी कोई न कोई ऐसा व्यक्ति आ ही जाता है। क्या यह अजीब नहीं है कि ऑटिस्टिक बच्चों के दिमाग कुछ क्षेत्रों में इतने तेज कैसे हो सकते हैं? मेरा मतलब है, यह दिमाग को झकझोर देने वाला है।

पतन शब्द एक धार्मिक निर्माण है जो आदम के पाप के परिणामों को पूरी मानव जाति पर लागू करता है। इस संबंध में हम सभी पतित हैं। और पतन का मतलब यह नहीं है कि हम जितने बुरे हो सकते हैं, उतने बुरे हैं, बल्कि हम तब तक उतने ही बुरे हैं, जब तक कि हम मसीह में मुक्ति नहीं पा लेते।

पतन किस तरह से मानवीय संदर्भ को प्रभावित करता है, इसके बारे में मुख्य संदर्भ। हमने कई संदर्भों को देखा है, और आपने और भी संदर्भ देखे हैं क्योंकि मैंने आपको नोट्स में ऐसा करने के लिए कहा है। पाप शब्द सिर्फ एक रूपिम है; यह एक शब्दांश वाला शब्द है जो ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह, ईश्वर का उल्लंघन करने को दर्शाता है।

पुराने नियम में तीन बड़े शब्द हैं। हमारे पास अपराध, अधर्म और पाप है। और अपराध का संबंध अतिक्रमण से है।

अधर्म का सम्बन्ध बुराई से है। पाप का सम्बन्ध लक्ष्य से चूकने से है। इन तीनों शब्दों का प्रयोग प्रतीकात्मक रूप से किया जाता है क्योंकि पाप के रूपकों के रूप में चुने जाने और उनका प्रयोग किए जाने से पहले उनका जीवन धर्म के अलावा किसी और चीज़ में था।

पाप और लक्ष्य से चूकना परमेश्वर के निर्देशों की अवज्ञा का वर्णन करता है। भजन 51 में इस पर एक बड़ा अध्ययन है। वे सभी शब्द भजन 51 में इस्तेमाल किए गए हैं, जो बतशेबा के साथ अपने पाप पर दाऊद के चिंतन का वर्णन करता है।

यह एक बहुत ही आकर्षक पाठ है जिसे आप पढ़ सकते हैं। हम पतन के प्रभावों से खुद को कैसे बचा सकते हैं? खैर, इसका केवल एक ही तरीका है, और वह है अपनी मानसिकता को बदलने के लिए शास्त्रों का सहारा लेना। बाइबल की शिक्षा के अनुसार हमारा विश्वदृष्टिकोण और मूल्य तथा निरंतर शिक्षा ही एकमात्र तरीका है जिससे हम पतन से हुए नुकसान से खुद को आगे बढ़ा सकते हैं।

और यह अधूरा होगा, लेकिन किसी दिन हम जानेंगे कि हम कैसे जाने जाते हैं, जैसा कि शास्त्र स्वयं कहते हैं। इसलिए, पतन के निहितार्थ एक और क्षेत्र है जो ईश्वर की इच्छा पर आधारित कई उपचारों में गायब है। वे पतन की भयावहता के लिए पर्याप्त रूप से जिम्मेदार नहीं हैं।

ठीक है, बाइबल की भूमिका के निहितार्थ। खैर, बाइबल ही ईश्वर के ज्ञान का हमारा एकमात्र साधन है। हाँ, आप प्रकृति को देख सकते हैं, और मेरा मानना है कि प्रकृति ईश्वर को प्रतिबिंबित करती है, लेकिन सच्चाई यह है कि इसे समझने के लिए आपको प्रकृति को बाइबल की नज़र से देखना होगा।

दाऊद ने जो कहा, आकाश महिमा की घोषणा करता है, आकाशमण्डल हस्तकला को दर्शाता है, दिन प्रतिदिन वाणी बोलता है। दाऊद एक आस्तिक था जो सृष्टि में परमेश्वर की महानता पर विचार करता था। वह नास्तिक नहीं था जो कहता था, ओह, इसे देखो।

यह ऐसा नहीं है। इस संबंध में प्रूफ़ टेक्स्ट के लिए सतही पढ़ना जोखिम भरा है। बहुत से लोग इसी ओर भागेंगे।

बाइबल की भूमिका बहुत ज़रूरी है। आप जो करना चाहते हैं, उसके लिए आप बाइबल के किसी भी पाठ को चुनकर अपना पक्ष नहीं रख सकते। आप कहेंगे कि भगवान मुझे इस रास्ते पर ले जा रहे हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि आप एक मामला बना रहे हैं।

आपको ऐसे शब्द मिलेंगे जो आपके अंदर की गहराई से आपकी इच्छा के अनुकूल हों। कभी-कभी आप इसके बारे में जानते हैं, कभी-कभी नहीं। आप इसे करने में गंभीर हो सकते हैं लेकिन किसी बात को साबित करने के लिए बाइबल में से चुनिंदा पाठ चुनना एक गंभीर रूप से दोषपूर्ण पद्धति है।

बाइबल की गंभीर व्याख्या ज़रूरी है। मैंने यह बात काफ़ी कह दी है, है न? अपने कामों के लिए परमेश्वर की इच्छा का फ़ैसला करना कोई खेल नहीं है। यह गंभीर मामला है और इस पर गंभीरता से विचार करने की ज़रूरत है।

यह आपके सर्वश्रेष्ठ का हकदार है। उदाहरण के लिए, यदि आप मंत्रालय में जाने वाले हैं, तो यह आपको मिलने वाली सर्वश्रेष्ठ शिक्षा का हकदार है। हम सभी की अपनी सीमाएँ होती हैं कि हम

उन शिक्षा वर्षों के दौरान क्या करने में सक्षम थे, हम कहाँ जाने में सक्षम थे, और हमें कौन से शिक्षक मिले।

लेकिन मुख्य बात यह है कि यह बहुत हद तक हम पर निर्भर करता है कि वे हमें जो देते हैं, उसे हम वास्तव में अपनाएँ और उसे दूसरे स्तर पर ले जाएँ। मेरे कई छात्र हैं जिन्होंने मुझसे कहीं ज़्यादा अच्छा प्रदर्शन किया है। मुझे लगता है कि यह थोड़ा शर्मनाक है।

लेकिन सच तो यह है कि मेरे कुछ छात्र ऐसे भी हैं जो मेरी कोशिशों से कहीं आगे निकल गए हैं और मुझे उन पर बहुत गर्व है। जब बाइबल आपको सीधा आदेश देती है, सीधा आदेश देती है, तो सीधे निर्देशों के अलावा कोई सरल उत्तर या निर्देश नहीं होते। और फिर भी, जो लोग अपने पड़ोसी से प्यार करते हैं, उन्हें भी परिभाषित करना पड़ता है।

ईश्वर से प्रेम करो, इसे परिभाषित किया जाना चाहिए। परिणामस्वरूप, कब्र के आदेश के पीछे भी बहुत कुछ हो सकता है। हमने इस बारे में बात की कि तुम हत्या नहीं करोगे।

तुम झूठ नहीं बोलोगे। हमने इस बारे में थोड़ी बात की। तो, आज्ञाओं का पालन किया जाना चाहिए, लेकिन कभी-कभी, हमें आज्ञाओं के गहरे अर्थों से भी निपटना पड़ता है।

निर्णय लेना व्यावहारिकता नहीं है। यानी व्यावहारिकता इस आधार पर काम करती है कि क्या समझ में आता है। हो सकता है कि यह आपको समझ में आए या चर्च को समझ में आए।

लेकिन यह निर्णय लेना नहीं है। निर्णय लेना बाइबल के आधार पर तर्कपूर्ण निर्णय है, और आपके पास वह है जिसे हम तर्क की रेखाएँ कहते हैं। आप A को C से, C को E से जोड़ सकते हैं। आपके पास ऐसी रेखाएँ हैं जो उस तर्क को जोड़ती हैं जिसे आप जीवन में किसी दिए गए निर्णय पर लागू कर रहे हैं।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह क्या है। हमने कुछ उदाहरण बताए हैं, और हम कुछ और उदाहरण बताएंगे। आप उन्हें गुणा कर सकते हैं।

उनमें से ज़्यादातर ऐसी चीज़ें होंगी जिनका बाइबल में सीधे तौर पर ज़िक्र नहीं किया गया है क्योंकि वे चीज़ें ज़्यादा चुनौतीपूर्ण हैं और हम उन्हीं को समझने की कोशिश कर रहे हैं। इसके अलावा, चुनने की हमारी आज़ादी के निहितार्थ। मैंने पहले भी कहा है कि मानवीय आज़ादी एक मिथक है।

क्यों? यह कठोर कैल्विनवाद या किसी और चीज़ की वजह से नहीं है। यह इसलिए है क्योंकि हम पापी हैं। हम अपने ही जाल में फँसे हुए हैं।

हम ऐसे मन में फँसे हुए हैं जो स्वाभाविक रूप से ईश्वर की ओर नहीं बढ़ेगा। हम सभी अपने स्वभाव और विश्वदृष्टि और मूल्यों के अनुरूप सोचते और कार्य करते हैं जिन्हें हम पहचानते और लागू करते हैं। ईसाई बनने से पहले, हमारा विश्वदृष्टि और मूल्य ईश्वर की ओर नहीं थे।

वे हमारे प्रति स्वार्थी थे। वे शायद ज़्यादा नेक होते और समुदाय, आपके शहर और आपके राज्य के लिए, जैसे कि कोई मासूम राजनेता होता, मुझे लगता है।

मैं इस बारे में बात नहीं करने जा रहा हूँ। लेकिन सच्चाई यह है कि हम अपनी प्रकृति में फँसे हुए हैं और यह मानवीय स्वतंत्रता को एक नई श्रेणी में ले जाता है। हम अपनी प्रकृति के संदर्भ में स्वतंत्र हैं।

मैं उस कल्पना का उपयोग करता हूँ। ट्रेन का खिंचाव उसकी प्रकृति की दिशा में होता है। और हमारी इच्छा का खिंचाव, इस उदाहरण का उपयोग करते हुए, हमारी प्रकृति की दिशा में होता है।

परिभाषा के अनुसार, हमारे साथ अन्याय हुआ है। और इसलिए हमें बदलने की ज़रूरत है। हमें बदलने की ज़रूरत है ताकि हम अच्छी दिशा में आगे बढ़ सकें और अच्छे फ़ैसले ले सकें।

इस मामले में हम खुद तय कर रहे हैं। हम खुद तय कर रहे हैं कि हम पुरानी प्रकृति को लागू कर रहे हैं या नई प्रकृति को। उम्मीद है कि हम नई प्रकृति और अच्छी चीजों के साथ खुद तय करेंगे।

यह एक दिव्य छवि है जिसे अपूर्ण रूप से भी हमारे अंदर काम करने की अनुमति है। तो बस इतना ही। मानवीय स्वतंत्रता एक बहुत ही दिलचस्प श्रेणी है।

धर्मशास्त्री इसके बारे में बहुत बात करते हैं। वे विशेष रूप से मोक्ष के संबंध में इसके बारे में बात करना चाहते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि मानव स्वतंत्रता, आखिरकार, एक मिथक है।

चूँकि हम पापी हैं और यहाँ तक कि अनुग्रह से बचाए गए पापी भी, हमें अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को सूचित करने की आवश्यकता है ताकि हमारी स्वतंत्रता उचित रूप से लागू हो सके। मानव स्वभाव गुणों का मिश्रण है। प्रकृति एक ऑन्टोलॉजिकल इकाई नहीं है।

अब, हमने उस शब्द का इस्तेमाल किया है। तो, मेरे पास एक नया स्वभाव है, एक पुराना स्वभाव है। कुछ लोगों ने इसका इस्तेमाल किया है, वे कहेंगे कि, ठीक है, हर ईसाई दो कुत्तों की तरह है।

आपके पास एक सफ़ेद कुत्ता और एक काला कुत्ता है। सफ़ेद कुत्ता ईश्वरत्व का प्रतीक है, और काला कुत्ता पाप का प्रतीक है। और आप जिस कुत्ते को सबसे ज़्यादा खाना खिलाएँगे, वही लड़ाई जीतेगा।

मुझे खेद है, यह एक भयानक उदाहरण है और रंग के साथ राजनीतिक रूप से गलत होने के अलावा और भी बहुत कुछ है। शायद ऐसी बहुत सी बातें हैं जो हमें नहीं कहनी चाहिए।

लेकिन क्योंकि यह कोई मिथक नहीं है, यह सिर्फ़ लोगों द्वारा लिया गया अर्थ है। लेकिन सच तो यह है कि आप दो कुत्ते नहीं हैं जो इस तरह लड़ रहे हैं। आप एक कुत्ता हैं।

और आपका नाम स्पॉट है। ईसाई बनने के बाद, आप काले धब्बों के साथ सफ़ेद हो जाते हैं, या आप सफ़ेद धब्बों के साथ काले हो जाते हैं। सच तो यह है कि ऐसे गुणों का मिश्रण है जिन्हें निभाने के लिए आपको बुलाया जाता है।

आज्ञा पालन करना। धर्मग्रंथों में वर्णित सद्गुणों और दुर्गुणों से बचने के संबंध में। पुनर्जन्म प्राप्त व्यक्तियों में पुरानी प्रकृति और नई प्रकृति होती है।

दो अलग-अलग मानसिकताएँ। और हम चुनते हैं कि हम किसका पालन करेंगे। हम शिक्षा के द्वारा, शास्त्रों को बेहतर ढंग से सीखकर, और परमेश्वर से प्रेम करके पुरानी प्रकृति को कम करने का प्रयास करते हैं।

लेकिन यह तब तक कभी खत्म नहीं होने वाला जब तक कि हम मसीह के दूसरे आगमन द्वारा शारीरिक रूप से मुक्त नहीं हो जाते। मनुष्य इस बारे में नासमझ हैं कि वे कौन हैं और वे क्यों कार्य करते हैं क्योंकि मनुष्य आमतौर पर खुद को जानने के लिए पर्याप्त गहराई से सोचने में विफल रहते हैं। लोग लगातार कुछ न कुछ कहते रहते हैं।

उन्होंने इस बारे में नहीं सोचा है। और अगर आप मेरी तरह इतने मूर्ख हैं कि उन्हें चुनौती देते हैं और कहते हैं कि अच्छा, तो आपका क्या मतलब है? आपको यह कैसे पता? वे लगभग नाराज़ हो जाते हैं। नतीजतन, हम सभी उस विफलता का हिस्सा हैं।

मानवीय विफलता। मनुष्य इस बारे में नासमझ है कि वह कौन है और क्यों कार्य करता है, क्योंकि मनुष्य आमतौर पर खुद को जानने के लिए पर्याप्त गहराई से सोचने में विफल रहता है। खुद को जानें।

अपनी पूर्वधारणाओं को जानें। अपनी प्रवृत्तियों को जानें। अपनी समझ को जानें।

ताकि आप, ईश्वर की कृपा से, उनसे दूर हो सकें। उस ट्रेन को बेहतर ट्रेक पर रखें। मनुष्य इस बारे में नासमझ हैं कि वे कौन हैं और वे क्यों कार्य करते हैं क्योंकि मनुष्य आमतौर पर सोचने में विफल होते हैं।

मुझे नहीं पता कि मैंने ऐसा किया या नहीं। मुझे लगा कि मैंने इसे पहले ही पकड़ लिया है। हाँ, मैंने ऐसा किया।

तो, हमारी चुनने की आज्ञादी असली है। हाँ, यह असली है। आप चुनने के लिए स्वतंत्र हैं।

लेकिन आप स्वतंत्र नहीं हैं। क्योंकि आप अपनी प्रकृति की दिशा में ही चुनाव करेंगे जब तक कि आप उस प्रकृति को एक नई दिशा में शिक्षित न करें। हमारे मन के भीतर, चाहे वह नया हो या मौलिक, हमें अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के आधार पर अपने विकल्पों के प्रति सचेत रहना होगा।

क्या हम पुराने स्वभाव के आज्ञाकारी होंगे? या नए स्वभाव के? शरीर के काम मुझे माफ करें; आत्मा का फल और शरीर के काम नए स्वभाव की दो प्रमुख प्रस्तुतियाँ हैं: आत्मा का फल, शरीर में पुराने स्वभाव के काम। और नए नियम में सभी प्रकार के सद्गुण और दुर्गुणों की सूचियाँ हैं जिनसे हम सीख सकते हैं। ठीक है।

अगली स्लाइड पर चलते हैं। विश्वदृष्टि और मूल्यों के निहितार्थ मॉडल बुद्धि का चयन हमारे विश्वदृष्टि और मूल्यों के हाल ही में किए गए प्रयोग पर आधारित है, न कि व्यावहारिकता पर, जैसा कि कुछ लोग कहते हैं कि जो आपको बुद्धिमानी लगे वही करें और बिना किसी तर्क के। यदि कोई तर्क नहीं है तो आपके पास कहने के लिए कुछ नहीं है।

ईश्वर की इच्छा को जानना और उस पर अमल करना हमारे अनुमानों पर आधारित नहीं है, बल्कि हम अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के रूप में क्या व्याख्या कर सकते हैं, इस पर आधारित है। यह उस पर आधारित नहीं है जो मैं महसूस करता हूँ। भावनाएँ बहुत अच्छी चीजें हैं, और हम सभी चीजों के बारे में गहराई से महसूस करना चाहते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि भावनाएँ एक परिवर्तित मन नहीं है।

भावना एक उत्पाद है। आप सही करते हैं तो आपको अच्छा लगता है। आप गलत करते हैं तो आपको बुरा लगता है।

और इसलिए, परिणामस्वरूप, हमें इस बात को लेकर सावधान रहना होगा कि हम अपने दिमाग में आने वाली आवाज़ों के लिए भगवान को कैसे दोषी ठहराते हैं, जिन्हें हम अंदेशा कहते हैं और कहते हैं कि भगवान ने मुझे बताया। खैर भगवान ने ऐसा नहीं किया। यह आप खुद से बात कर रहे हैं।

ईश्वर की आत्मा आपको विवेक के रूप में दोषी ठहराएगी जो सही है, ट्रेन आपको आपके विश्वदृष्टिकोण के संबंध में दोषी ठहराएगी। वे आवाज़ें हैं जो वहाँ हैं, लेकिन वे आपको सामग्री नहीं दे रही हैं। वे उस सामग्री के संबंध में दृढ़ विश्वास का दबाव बमुश्किल लागू कर रहे हैं जिसे आप पहचानते हैं और लागू करते हैं।

हम इसलिए काम करते हैं क्योंकि हमारे पास ऐसा करने के लिए तर्क हैं। अब, यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण वाक्यांश है। ऐसा करने के लिए तर्क की रेखाएँ।

कृपया इस बारे में सोचें। आप जो भी कर रहे हैं, उस पर कुछ गंभीर विचार रखें। आपको इसे कागज़ पर लिखना होगा, जहाँ आप इसे देख सकें और अपने आप से ज़ोर से सोच सकें। और अच्छाई और बुराई दिखाने के लिए एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ तर्क की रेखाएँ खींचें।

इसे ज़ोर से बोलें। इसे उन लोगों को बताएँ जिनके साथ आप अच्छी बातचीत कर सकते हैं। हमें अपनी सोचने की प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियों को समझना चाहिए।

हम अगले भाग में उन पर चर्चा करेंगे, जो अगले व्याख्यान के बाद तीसरा भाग होगा। चूँकि हम केवल इंसान हैं, इसलिए हमेशा तनाव रहेगा। हम कभी भी पूरी तरह से आश्वस्त या संतुष्ट नहीं हो सकते।

यह मानवीय जीवन की प्रकृति नहीं है। ईश्वर ने हमें प्रेरित टिप्पणियाँ और इस तरह की चीजें नहीं दी हैं, इसलिए हमें खुद के प्रति सावधान रहना चाहिए और यह समझना चाहिए कि एक अच्छा व्यक्ति शायद कभी भी निर्णय लेने में उतना सहज नहीं होता जितना वह होना चाहता है, लेकिन आपको आगे बढ़ना होगा। और अगर आप इसे सही तरीके से कर रहे हैं, तो आप सबसे अच्छा संभव निर्णय ले रहे हैं।

अब, मैं फ्राइसन पर वापस आता हूँ। मैंने कुछ बार इस बारे में संकेत दिया है, और मैं यहाँ इसका उल्लेख करूँगा। फ्राइसन के लिए निहितार्थ। यदि आप उनकी पुस्तक के बारे में नहीं जानते हैं, तो मैं अपने व्याख्यानों के अंत में आपको इसके बारे में थोड़ा-बहुत बताऊँगा, लेकिन कुछ साल पहले यह अमेरिका में एक प्रमुख पुस्तक थी।

जहाँ तक मेरा सवाल है, फ्राइसन मानवीय स्वतंत्रता के बारे में नासमझ है। उनके मॉडल में पतन पर पर्याप्त रूप से विचार नहीं किया गया है। पतन का ज्ञानात्मक प्रभाव विश्वासियों के साथ-साथ पापियों को भी प्रभावित करता है।

इसलिए, अगर वह आपको आध्यात्मिक रूप से उचित काम करने के लिए कहता है, तो आप कैसे जानते हैं कि आप वास्तव में आध्यात्मिक रूप से उचित काम के बारे में सोच रहे हैं? यह कोई संबोधन नहीं है। हमारी स्वतंत्रता हमारे स्वभाव और हमारी परिपक्वता से बंधी हुई है। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, हम परिपक्व होते जाते हैं।

मैं इस बात से सहमत हूँ कि जीवन में बहुत से निर्णयों के साथ, एक गलत निर्णय को फिर से दोहराना एक निर्णयकर्ता के रूप में परिपक्व होने का हिस्सा है। वास्तव में, जैसा कि किसी ने एक बार कहा था, भगवान हमारी गलतियों पर अपना काम बनाता है। कभी-कभी, भगवान की कृपा से, हम ऐसा निर्णय लेते हैं जो अच्छा नहीं होता।

यह कोई अनैतिक निर्णय नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा निर्णय है जो अच्छा नहीं है। और हमें इसका एहसास तब होता है जब हम इसमें फंस जाते हैं। और फिर हमें इससे बाहर निकलने के लिए कोई न कोई रास्ता निकालना ही पड़ता है।

लेकिन हम गलत निर्णयों से ऐसी चीजें सीखते हैं जो हम कभी नहीं सीख पाते अगर हमने पहले ही सही निर्णय ले लिया होता। क्या आपको कभी लगता है कि शायद यह ईश्वर की कृपा है कि वह हमें चीजें सिखाता है? मुझे लगता है। और यह सोचने के लिए एक बहुत ही गहरा विचार है।

उनका कथन, फ्राइसन का कथन, यह है कि ईश्वर की नैतिक इच्छा के भीतर लिया गया कोई भी निर्णय ईश्वर को स्वीकार्य है। मुझे नहीं लगता कि यह बिल्कुल भी पर्याप्त है। आपका कोई भी निर्णय जो ईश्वर की नैतिक इच्छा का उल्लंघन नहीं करता है, वह स्वीकार्य नहीं है।

खैर, आपको ऐसे निर्णय लेने चाहिए जो ईश्वर की नैतिक इच्छा का उल्लंघन न करें। लेकिन जब आप ईश्वर की नैतिक इच्छा का उल्लंघन नहीं कर रहे हों, तो यह सोचना बहुत ज़्यादा ज़रूरी है कि कौन सा निर्णय अच्छा है। नैतिक इच्छा के साथ काम करने से भी ज़्यादा।

ईश्वर की नैतिक इच्छा फ्रिसन के मॉडल से बड़ी है। ईश्वर की इच्छा फ्रिसन के मॉडल से बड़ी है। ईश्वर की नैतिक इच्छा के निहितार्थ के लिए विवेक की आवश्यकता होती है, और बुद्धि विकल्पों को समझती है।

आध्यात्मिक सुविधा के रूप में बुद्धि शायद ही बाइबिल का प्रतिमान हो। हम पुराने नियम के व्याख्यानों में बुद्धि के बारे में बात करते हैं, और ऐसा नहीं है। बुद्धि वास्तव में कानून पर आधारित विश्वदृष्टि और मूल्य प्रणाली की अभिव्यक्ति है, लेकिन कानून का हवाला नहीं देती। इसलिए, बुद्धि साहित्य को पढ़ना और यह पता लगाने की कोशिश करना बहुत दिलचस्प है कि हम मूसा में ऐसा कुछ कहाँ देख सकते हैं जो इसका संकेत दे। उन्हें यह कहाँ से मिलता है? बुद्धि सृष्टि के बारे में बहुत कुछ कहती है।

नहीं, यहाँ कुछ सवाल हैं। इसलिए, हमें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि हम यह समझें कि बुद्धिमत्ता वह सरल नहीं है जो आप सोचते हैं और कोई व्यक्ति वही कर रहा है जिससे आप सहमत हैं और उसे बुद्धिमत्ता कह रहे हैं। खैर, इतना ही काफी है।

मैं अपने व्याख्यानों के अंत में उस पर वापस आऊंगा और आपको तीन दृष्टिकोण बताऊंगा जिन्हें मैं प्रतिस्पर्धा कहूंगा। यह मेरा था, और प्रतिस्पर्धा एक विश्वदृष्टि और मॉडल दृष्टिकोण था। ठीक है, धन्यवाद। हमारे पास एक और संक्षिप्त व्याख्यान है जहाँ हम कुछ वस्तुओं को देखने जा रहे हैं जो प्रसंस्करण हैं जो हम करने जा रहे हैं जहाँ हम सोच को संसाधित कर रहे हैं, और फिर हम व्यक्तिपरक चुनौतियों पर जाने वाले हैं, जो ऐसे व्याख्यान हैं जिन्हें आप मिस नहीं करना चाहेंगे क्योंकि वे वास्तव में खुद को जानने का बहुत ही दिलचस्प पहलू हैं।

मैं बस इतना ही कहूंगा। धन्यवाद, और आपका दिन शुभ हो।